अध्याय 7

कारक

कारक के अर्थ होला-करेवाला। व्याकरण में 'कृ' धातु से बनल, 'कारक' शब्द के लक्षण बतावल बा कि क्रिया के संगे सम्बन्ध (अन्वय) के योग्यता कारकत्व ह आ जवना में कारकत्व होखे, उहे कारक ह- **'क्रियान्वयित्वम् इति कारकत्वम्।'** बाकी नागेश भट्ट खाली क्रिया के निष्पादक के कारक मनले बाड़न- **'क्रिया निष्पादकत्वं कारकत्वम्।'** मतलब क्रिया के निष्पन्न करे के योग्यता जेकरा में होखे चाहे जे क्रिया के निष्पत्ति में सहायक होखे, ऊ कारक ह।

क्रिया के साथ अन्वय के आधार पर कारक के चार गो भेद होला-कर्त्ता, कर्म, करण आ अधिकरण, कई वैयाकरण सम्प्रदान, अपादान आ संबंध के क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध चाहे क्रिया के निष्पादन में सीधा सहायक ना होखे के वजह से कारक नइखे मनले। बाकी आचार्य रामदेव त्रिपाठी आ विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव क्रिया के साथे प्रत्यक्ष आ परोक्ष संबंध के आधार पर सम्बन्ध कारक के छोड़ के कारक के छव गो भेद मनले बाड़न-कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान आ अधिकरण। उहँवे डॉ॰ उदयनारायण तिवारी सम्बन्ध के भी कारक भेद में स्थान देले बाड़न। क्रिया के साथ अप्रत्यक्ष संबंध के आधार पर यदि सम्प्रदान आ अपादान के कारक भेद मानल जा सकत बा त सम्बन्ध के कारकभेद ना मानल उचित ना कहा

सके। एह तरह से क्रिया के साथ प्रत्यक्ष आ परोक्ष संबंध के आधार पर कारक के सात भेद मानल जा सकेला आ ओकरा के दू कोटि में रखल जा सकेला–

(1) क्रिया के प्रत्यक्ष सम्बन्धी कारक–कर्त्ता, कर्म, करण आ अधिकरण।

(2) क्रिया के अप्रत्यक्ष सम्बन्धी कारक–सम्प्रदान, अपादान आ सम्बन्ध।

कर्त्ता कारक

वाक्य में जे क्रिया करेला चाहे क्रिया करे खातिर स्वतंत्र होला, ओकरा के कर्त्ताकारक कहल जाला। ई कर्त्ताकारक तीन तरह के होला– प्रधान, प्रयोजक आ प्रयोज्य।

प्रधान कर्त्ता–जे खुद क्रिया करेला, जइसे–राम हाँफतारे।

प्रयोजक कर्त्ता– जे दोसरा से क्रिया (काम) करवावेला, जइसे–नितेश रवि से पाती पढ़ववलन। इहाँ नितेश प्रयोजक कर्त्ता बाड़न।

प्रयोज्य कर्त्ता– जे दोसरा के प्रेरणा से क्रिया करे। ऊपर के वाक्य में 'रवि' प्रयोज्य कर्त्ता बाड़े, काहे कि प्रयोजक नितेश से प्रेरित होके पढ़े के काम करत बाड़े।

भोजपुरी के कर्त्ता के साथे कवनो कारकीय चिह्न ना लागे। बाकी विशेष परिस्थिति में कर्त्ता के साथे 'के' आउर 'से' परसर्ग लागेला, जइसे– कृदन्त क्रिया आ विधि क्रिया से जहाँ चाहिए के अभिप्राय प्रकट होय– मोहन के खाये के चाहीं। सीता के नहाये के चाहीं। राम के घरे जाये के बा।

कर्त्ता द्वारा क्रिया करे में असमर्थता प्रकट करे खातिर चाहे अनायास क्रिया सम्पन्न हो जाये के स्थिति में कर्त्ता खातिर 'से' परसर्ग लागेला, जइसे-करुणा से गावल नइखे जात, किसन से बजावल नइखे जात, गणेसी से गिलास फूट गइल, तहरा से नइखे रहल जात, उनका से नइखे सहल जात वगैरह।

कर्मकारक

वाक्य के जवना पद पर क्रिया (व्यापार) के फल पड़ेला, ऊ कर्म कारक कहल जाला।

करण कारक

क्रिया के सिद्धि में जे सबसे बढ़के साधक होखे चाहे क्रिया (व्यापार) करे में कर्त्ता जेकर सबसे अधिक सहायता लेवे, ऊ करण कारक होला। भोजपुरी के करण कारक में 'से' परसर्ग के प्रयोग होला, जइसे-ऊ तलवार से लड़ी, हरिआ लाठी से मारी, सुप्रज्ञा पाल कंडा का कलम से लिखतारी। एह वाक्य सब में तलवार, लाठी, कंडा के कलम करण कारक के उदाहरण बा।

करण कारक के संज्ञा रूप में ए, एं, अन्, अन्हि वगैरह विभक्ति लगा के त कबो 'के' परसर्ग लगा के 'से' परसर्ग के अर्थ प्रकट कइल जाला, भुखे पेट बथऽता (भुख से पेट बथऽता), दाँतन्हि लइका चीर दिहलस (दाँतन से लइका चीर दिहलस), कवना राहे जइबऽ (कवना राह से जइबऽ), चेथरूआ आसकते ना गइल (चेथरूआ असकत में ना गईल), ई

बस्तर देहे लगा लऽ (ई बस्तर देह से लगालऽ), हाथ के लिखल किताब (हाथ से लिखल किताब), बाप के अरजल धन (बाप से अरजल धन), ढेंकी के कूटल चाउर (ढेंकी से कूटल चाउर) वगैरह।

सम्प्रदान कारक

वाक्य में जेकरा खातिर क्रिया (व्यापार) कइल जाय, ओकरा के सम्प्रदान कारक कहल जाला। जेकरा के कुछ दिहल जाय चाहे जेकरा खातिर कुछ कइल जाय, उहे सम्प्रदान कारक कहल जाला।

भोजपुरी में सम्प्रदान कारक खातिर ला, लागे, लेखें, बदे, खातिर, वास्ते, नेवरतीं, निमित वगैरह यौगिक परसर्गन के प्रयोग कइल जाला, जइसे-राम ला/लागि/बदे/खातिर/वास्ते/नेवरती दवा ले आवऽ, कुक्कुर खातिर कवरा ले आवऽ, मोर लेखे नी बालम जी के नइहरवा वगैरह।

भोजपुरी लोकगीतन में सम्प्रदान खातिर लेखे, जोगे, लागि, के परसर्ग के खूब प्रयोग पावल जाला। जइसे-हमरा सामी जोगे जेवना बनावहू हे सइंया लागी सेजिया डंसइबो, हमरा के गहना गर्‌हा द, बबुआ के आमी घुमा दऽ वगैरह।

अपादान कारक

वाक्य में क्रिया द्वारा जहाँ से भा जवना से कवनो चीज अलग होय, ओकरा के अपादान कारक कहल जाला। ई बात स्पष्ट बा कि स्थिरता ओकरे में होई जवना से कवनो चीज अलग होत होखे आ उहे विश्लेष के आश्रय होई एह से ओकरे के अपादान कहल जाला।

कहीं-कहीं आ कबो-कबो अपादान खातिर के, से परसर्ग के प्रयोग होला जइसे- जेल के भागल कैदी, पेड़ से पतई गिरल वगैरह।

सम्बन्ध कारक

संज्ञा के जवना रूप से वाक्य के वस्तु के सम्बन्ध दोसरा वस्तु के संगे सूचित होय, ओह रूप के संबंधकारक कहल जाला, जइसे-गरीब के कुटिया, देवेन्द्र के आजी (दादी), शुभेन्द्र के बाबा, सर्वेन्द्र के भाई, निवेदिता के माई वगैरह।

वाक्य में क्रिया के साथे सीधा सम्बन्ध ना होखे के कारण सम्बन्ध के कारक भेद ना मानल जाव। कुछ वैयाकरण सम्बन्ध के मुख्य कारक भेद ना मान के गौण भेद मनले बाड़न। बाकिर हिन्दी आ भोजपुरी के कुछ वैयाकरण लोग के आग्रह के सम्मान करत भोजपुरी में संबंध के कारक भेद मान लिहल बा।

भोजपुरी में सम्बन्धकारक खातिर 'के' परसर्ग लागेला बाकिर जब वाक्य में सम्बन्ध कारक के तीनगो पद लगातार आवेला त पुनरुक्ति दोष मेटावे खातिर पहिला बेरि 'का' आ दोसरा बेरि 'के' के प्रयोग कइल जाला-इनका घर के हाल ठीक नइखे, सुगिया का बेटा के बिआह बा वगैरह।

अधिकरण कारक

व्याकरण में क्रिया व्यापार का आधार के अधिकरण कहल जाला, जइसे-खटिया पर चुनउटी बा। इहवाँ 'खटिया' अधिकरण के उदाहरण बा।

जवना संज्ञा या सर्वनाम से क्रिया का व्यापार के आधार ज्ञात होय, ओकरा के अधिकरण कारक कहल जाला। ई आधार तीन तरह के होला– औपश्लेषिक (एक देशीय), वैषेयिक अभिव्यापक।

भोजपुरी में औपश्लेषिक आ अभिव्यापक आधार खातिर 'में' आ वैषेयिक आधार खातिर 'प' चाहे 'पर' परसर्ग के प्रायः व्यवहार होला, जइसे–

बाघ जंगल में रहेला। (अपश्लेषिक)

घरभरना पलंगरी पर ओठंगल बा। (वैषेयिक)

तिल में तेल बा। (अभिव्यापक)

भोजपुरी में अधिकरण कारक खातिर 'में' 'प' चाहे 'पर' परसर्ग के प्रयोग कइल जाला।

सम्बोधन

भोजपुरी के वैयाकरण सम्बोधन के कारक भेद नइखन मनले। केहू के हाँक लगावे, बोलावें चाहे सम्बोधित करे खातिर एकर प्रयोग कइल जाला, बाकी क्रिया के साथे प्रत्यक्ष चाहे परोक्ष सम्बन्ध ना भइला के कारण एकरा के कारक भेद ना मानल जाय।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'कारक' शब्द कवना धातु से बनल बा।

(क) कार (ख) कृ

(ग) कर (घ) रक्

2. भोजपुरी में कारक के कएगो भेद मान्य बा।

(क) नव गो (ख) पाँच गो

(ग) सात गो (घ) एगारह गो

3. 'में' कवना कारक के परसर्ग ह।

(क) अधिकरण (ख) सम्प्रदान

(ग) सम्बन्ध (घ) करण

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कारक के परिभाषा देत ओकरा भेदन के नाँव लिखीं।
2. कारक का भेद के परिभाषा आ परसर्ग बताईं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कारक के परिभाषा देत ओकरा भेदन के विभक्ति/परसर्ग सहित परिचय दीं।